अध्याय द्वितीय

सम्बंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय
सम्बंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है | समस्या से सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन करना महत्त्वपूर्ण कारक है | समस्या से सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है | जिससे किसी कार्य की पुनरावृत्ति न हो | पूर्व के अनुसंधान के अध्ययन के द्वारा अन्य सम्बंधित समस्याओं का पता लगाया जा सकता है | अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सम्बंधित समस्याओं पर पहले से किये गए कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं किया जा सकता | साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है | समस्या से सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तरके निर्धारण में एक महत्त्वपूर्ण कारक है | साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है |

2.2 सम्बंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व

वस्तुतः सम्बंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधार्थी को उचित दिशा नहीं प्राप्त हो सकती जब तक उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कार्य किया गया है | तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं तब तक वह उस समस्या का निर्धारण ठीक प्रकार से नहीं कर सकेगा और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है|

2.3 सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

1. राव और भारती 1989

समस्या

केंद्रीय विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकनों का अध्ययन उद्देश्य

1. विभिन्न विषयों एवं विभिन्न विद्यालयों में प्रस्तुत एवं अनिश्चितता के स्तर के बीच में सह सम्बन्ध ज्ञात करना |
2. वार्षिक परीक्षा में सतत मूल्यांकन पद्धति के प्रभावों का अध्ययन करना |
3. अनिश्चितता के सन्दर्भ में माता - पिता के गुणों एवं वार्षिक अंक प्राप्ति के मध्य सह सम्बन्ध ज्ञात करना |

निष्कर्ष

1. माता-पिता कि शिक्षा का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर प्रभाव पाया गया |
2. माता -पिता कि आयु का विद्यार्थियों के वार्षिक अंकों पर प्रभाव देखा गया |
3. माता-पिता कि आयु भी इस तंत्र को प्रभावशाली बनाने में सहायक है |

2. भट्टाचार्य अर्चन शर्मा निर्मला (1998)

समस्या

प्राथमिक शालेय स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्रियाओं का समान महत्व |

उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रम के क्षेत्र में मूल्यांकन को जांचना |

2. असम के जोरहट जिले के प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन करना |

3. अध्यापको की सी. सी.ई. के प्रति जागरूकता को जानना |

निष्कर्ष

1. विद्यालय में सहशैक्षिक क्रिया को करने हेतु कोई व्यवस्था (जगह) नहीं है |

2. विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों में कौशल उपयोगिता का निर्धारण करने हेतु मूल्यमापन प्रक्रिया का कोई प्रारूप नहीं है | सी.सी.ई.के अनुसार विद्यालयीन दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है |

3. अध्यापकों की अनुपस्थिति पायी गई |

4. केवल सैद्धांतिक रूप में अध्यापको को इसके बारे में पता है |

5. यह निगरानी हेतु परिवेक्षण प्रतिक्रिया के लिए राज्य प्राथमिक अधिकारी से कोई दिशा-निर्देश नहीं दिये जाते |

6. इस व्यक्ति का प्रमुख कारन यह है कि औपचारिक प्रशिक्षण सम्बन्ध में स्कूल के पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में इन गतिविधियों को शामिल किया गया है |

7. शैक्षिक गतिविधियों के महत्व के अलावा सहशैक्षिक गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिए |

3. कौल एवं सतीश चंद (1989)

समस्या

उपलब्धियां, प्रेरणा एवं मानसिक तनाव पर इकाई परीक्षण का अध्ययन |

उद्देश्य

1. हाईस्कूल के विद्यार्थियों कि उपलब्धि प्रेरणा पर इकाई परीक्षण का अध्यन करना|

2. हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक तनाव पर इकाई परीक्षण का अध्ययन |

निष्कर्ष

1. विद्यार्थियों के प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह में उपलब्धि एवं प्रेरणा में समानता है |

2. प्रयोग के पहले एवं 20 दिन बाद भी प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह में तनाव पाया गया |

4. राव पी. मंजुला (2001)

समस्या

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कि प्रभावशीलता का पदभार शिक्षकों के मूल्यांकन |

उद्देश्य

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभाव का अध्ययन करना है, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यांकन के तरीको पर का मूल्यांकन करना|

(i) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा शिक्षकों के प्रशिक्षण को लागू करने से पहले मूल्यांकन तरीकों का अध्ययन करना |

(ii) सतत और व्यापक मूल्यांकन पर प्रशिक्षण पैकेज का अध्ययन |

(iii) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभाव का अध्ययन |

परिकल्पना

(i) सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण कार्यक्रम एक प्रभाव है |

(ii) जागरूकता एवं शिक्षकों के मूल्यांकन के कौशल का प्रभाव |

(iii) कक्षा के अनुदेश के दौरान शिक्षकों के कौशल का अध्ययन |

(iv) अध्यापकों की रिकार्डिंग और रिपोर्टिंग की प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन का अध्ययन |

5. कौर (1991)

समस्या

दो विभिन्न स्कूलों में उपलब्धि पर मानसिक तनाव तथा बुद्धिमत्ता का अध्ययन

उद्देश्य

दो विभिन्न स्कूल तंत्र में शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक तनाव एवं बुद्धिमत्ता का समेकित रूप से तथा अलग -अलग प्रभाव का अध्ययन |

निष्कर्ष

(i) पब्लिक स्कूल के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया |

(ii) मानसिक तनाव एवं बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर पाया गया जो कि पब्लिक स्कूल के लिए 7 प्रतिशत एवं सरकारी स्कूल के लिए 9-30 प्रतिशत पाया गया |

6. जैन (1990)

समस्या

"किशोर छात्राओं के आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्य के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना|"

उद्देश्य

1. किशोर छात्राओं की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्यों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना |

2. धनात्मक आत्म अवधारणा एवं उच्च ज्ञानात्मक क्षमता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना |

निष्कर्ष

(i) उच्च धनात्मक आत्म अवधारणा वाली छात्राओं में उच्च शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करती हैं ।

(ii) उच्च आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्यों के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया ।

(iii) धनात्मक आत्म अवधारणा एवं उच्च ज्ञानात्मक क्षमताएं सार्थक रूप में साथ साथ मिलती है ।